सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

Savitribai Phule Pune University, Pune

नई शिक्षा नीति2020 [NEP]के अंतर्गत एम. ए. हिंदी का पाठयक्रम

Under The New Education Policy 2020 [NEP] M.A. Hindi Course

संबद्ध महाविद्यालयों के लिए

For Affiliated colleges

एम. ए.हिंदीप्रथम वर्ष

प्रथम एवं द्वितीय अयन

Academic year

2023-2024

अनुक्रम

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष/प्रथम अयन : 22 क्रेडिट

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट	पृष्ठ क्रमांक
HIN1.	भाषाविज्ञान	4	
HIN2.	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	4	
HIN3.	हिंदी कहानी साहित्य	4	
HIN4.	हिंदी व्यावहारिक व्याकरण	2	
	Major Elective Mandatory (one)		
HIN5.	हिंदी नाटक और रंगमंच	4	
HIN6.	राजभाषा हिंदी : संवैधानिक स्थिति	4	
HIN7.	हिंदी भाषा शिक्षण	4	
	Research Methodolgy		
HIN8.	शोध प्रविधि (Research Methodolgy)	4	

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष/द्वितीय अयन : 22 क्रेडिट

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट	पृष्ठ क्रमांक
HIN9.	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	4	
HIN10.	भारतीय लोक साहित्य	4	
HIN11.	हिंदी उपन्यास साहित्य	4	
HIN12.	हिंदी आलोचना	2	
	Major Elective Mandatory (one)		
HIN13.	हिंदी पत्रकारिता	4	
HIN14.	आधुनिक हिंदी कविता	4	
HIN15.	हिंदी कथेतर गद्य साहित्य	4	

	Internship		
HIN16.	On Job Training [OJT / FP]	4	

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष/प्रथम अयन

अ. क्र.	**Major Mandatory**	**क्रेडिट**
HIN1.	भाषाविज्ञान	4

लक्ष्य (Aim) :

भाषाविज्ञान में भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन कई दृष्टियों से किया जाता है, जैसे सामान्य भाषाविज्ञान, वर्णनात्मक भाषाविज्ञान, एककालिक भाषाविज्ञान, बहुकालिक भाषाविज्ञान, तुलनात्मक भाषाविज्ञान, सैद्धांतिक भाषाविज्ञान,अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषाविज्ञान भाषओं के अध्ययन विश्लेषण का विज्ञान है। अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान में भाषा का प्रयोग परक अध्ययन किया जाता है, जैसे, भाषा सिखाना, अनुवाद करना, कोश बनाना, लिपि सुधार, शैली विवेचन आदि। समाज भाषाविज्ञान में समाज के परिप्रेक्ष्य में भाषा का अध्ययन किया जाता है। भाषा संबंधी सारे कौशल भाषाविज्ञान के अध्ययनोपरांत ही अर्जित किये जा सकते हैं। प्रत्येक काल में भाषा का विश्लेषण होना आवश्यक होता है। भाषा में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ, स्वरूप एवं प्रयोग आदि की दृष्टि से भाषाविज्ञान का विश्लेषणात्मक अध्ययन आवश्यक है। भारतीय समाज बहुभाषिक है परिणामतः बहुभाषा भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है ।

परिणाम(Outcomes) :

1. भाषाविज्ञान का स्वरूप समझेंगे।
2. तुलनात्मक भाषाविज्ञान का ज्ञान प्राप्त करेंगे ।
3. ऐतिहासिक भाषाविज्ञान का ज्ञान प्राप्त करेंगे ।
4. अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान से भाषा वैज्ञानिक कौशल से अवगत होंगे।
5. कोश विश्लेषण के कौशल से अवगत होंगे।
6. स्वनविज्ञान, अर्थविज्ञान के ज्ञान से अवगत होंगे ।
7. रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान, प्रोक्तिविज्ञान, समाज भाषाविज्ञान का स्वरूप समझेंगे ।

8. भाषा वैज्ञानिक कौशल के आधार पर वर्तमान भाषा, साहित्य आदि का मूल्यांकन करना सिखेंगे।

शिक्षाविधि (Pedagogy):

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	भाषाविज्ञान : परिभाषा, स्वरूप और व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ। समाजभाषाविज्ञान का सामान्य परिचय।	15 तासिकाएँ
इकाई – II	स्वनिम विज्ञान : स्वन की परिभाषा, वागावयव और कार्य, स्वन वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिम परिवर्तन।	15 तासिकाएँ
इकाई – III	रूपिम विज्ञान : रूप प्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की परिभाषा, रूपिम के भेद और प्रकार्य। पदबंध और उपवाक्य : पदबंध का स्वरूप, पदबंध के भेद, उपवाक्य का स्वरूप, उपवाक्य के भेद।	15 तासिकाएँ
इकाई – IV	अर्थ विज्ञान : अर्थ की परिभाषा और स्वरूप, शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ और कारण। प्रोक्ति विज्ञान : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप। प्रोक्ति – वर्गीकरण और आधार। प्रोक्ति की अशुद्धियाँ।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. भाषा और समाज - रामविलास शर्मा
2. आधुनिक भाषाविज्ञान - राजमणि शर्मा
3. सांस्कृतिक भाषाविज्ञान - डॉ. रामानंद तिवारी
4. भाषाविज्ञान - सं. डॉ. राजमल बोरा
5. भाषा शास्त्र तथा हिंदी भाषा की रूपरेखा - डॉ. देवेंद्रकुमार शास्त्री
6. भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी
7. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
8. हिंदी भाषा संरचना - डॉ. भोलानाथ तिवारी
9. आधुनिक भाषाविज्ञान - डॉ. कृपाशंकर सिंह, डॉ. चतुर्भुज सहाय
10. हिंदी का वाक्यात्मक कारण - प्रो. सूरजभान सिंह
11. भाषाविज्ञान के आधुनातन आयाम - डॉ. अंबादास देशमुख
12. ऐतिहासिक भाषाविज्ञान और हिंदी - राजेंद्र प्रसाद सिंह
13. भाषाविज्ञान: सैद्धांतिक चिंतन - रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
14. भाषाशास्त्र के सूत्रधार - रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
15. भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा - लक्ष्मीकांत पाण्डेय/प्रमिला अवस्थी
16. भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा – मुकेश अग्रवाल
17. भाषाविज्ञान, हिंदी भाषा और लिपि - राम किशोर शर्मा
18. महाराष्ट्र में हिंदी अध्ययन में आनेवाली समस्याएं - डॉ. संजय दवंगे
19. भाषाविज्ञान - डॉ. जयकुमार जलज
20. ऐतिहासिक भाषाविज्ञान - - डॉ. जयकुमार जलज

◈◈◈

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष/प्रथम अयन

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN2.	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	4

लक्ष्य (Aim) :

भारतीय साहित्य के विकास में प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। हिदी साहित्य का प्रारंभ ही प्राचीन काव्य से माना जाता है। राजनीतिक उथल-पुथल के बीच में भी इस युगीन साहित्य ने अपने समय की सच्चाई को प्रामाणिकता से अभिव्यक्त किया है। रासो साहित्य, धार्मिक साहित्य, लौकिक साहित्य, गद्य साहित्य, प्रेम साहित्य आदि साहित्य प्राचीन काव्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस साहित्य से तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों का परिचय मिलता है। पृथ्वीराज रासो, विद्यापति पदावली एवं अमीर खुसरो की पहेलियाँ-मुकरियाँ इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। इसमें वीर एवं श्रृंगार रस का अद्‌भुत समन्वय हुआ है। भारतीय प्राचीन इतिहास को जानने की दृष्टि से भी यह काव्य महत्वपूर्ण है।

हिंदी का मध्यकालीन युग हिंदी का स्वर्णयुग माना जाता है। यह भक्ति की महत्ता स्थापित करने की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इसी समय संपूर्ण भारत में भक्ति आंदोलन की लहर शुरू हुयी। हिंदी में कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, मीरांबाई आदि कवियों के काव्य ने इस भक्ति आंदोलन को भारतव्यापी बनाया। यह युग आम समाज केलिए कष्टप्रद था। प्रजा दीन-हीन, लाचार-बेबस होकर जी रही थी. उनके भीतर की आस्था और विश्वास खो गया था। मध्यकालीन काव्य ने उनके भीतर चेतना और जीने की उर्जा निर्माण की। इस काव्य में भारत का संपूर्ण जीवन दर्शन समाहित है। प्रेम, त्याग, करुणा, अहिंसा, समन्वयशीलता, मानवता, मनुष्यता आदि वैश्विक एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना इस काव्य का प्रतिपाद्य है। सगुण एवं निर्गुण भक्ति भाव के इस काव्य ने संपूर्ण मानव जाति को आचरण की सभ्यता का पाठ पढ़ाया है। भक्ति की धारा के बीच कवि भूषण ने भी अपनी वीर रस की

कविताओं से मध्ययुगीन इतिहास को सच्चाई से अभिव्यक्त किया है। यह काव्य अपनी मानवीय विरासत की बदौलत आज भी प्रासंगिक है।

परिणाम(Outcomes):

1. प्राचीन काव्य के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
2. आदिकालीन वीर एवं शृंगार की कविताओं से परिचित होंगे।
3. आदिकालीन धार्मिक, रासो, लौकिक, प्रेमपरक एवं गद्य काव्य से परिचित होंगे।
4. अमीर खुसरो के काव्य में अभिव्यक्त लोकतत्व से परिचित होंगे।
5. पृथ्वीराज रासो का जीवन संघर्ष, त्याग एवं बलिदान से परिचित होंगे।
6. प्राचीन एवं मध्यकालीन महाकाव्य परंपरा से अवगत होंगे।

4. भक्ति आंदोलन के स्वरूप समझेंगे।
5. सगुण और निर्गुण भक्तिधारा से परिचित होंगे।
6. मध्यकालीन काव्य में अभिव्यक्त भारत की सांस्कृतिक विरासत को जानेंगे।
7. कबीर, जायसी, तुलसीदास, सूरदास की काव्य संवेदना से परिचित होंगे।
8. मध्यकालीन काव्य में अभिव्यक्त प्रेम, त्याग, करुणा, अहिंसा, समन्वयशीलता, मानवता, मनुष्यता आदि मानवीय मूल्यों से परिचित होंगे और उसका प्रचार-प्रसार करेंगे।

10.मीरांबाई की भक्ति और विद्रोह को जानेंगे।

11. कवि भूषण की वीर रस की कविताओं से परिचित होंगे।

शिक्षाविधि (Pedagogy):

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि ।

इकाई	**पाठ्यविषय**	**तासिकाएँ**
इकाई – I	प्राचीन काव्य चंदबरदायी – पृथ्वीराज रासो – रेवातट अमीर खुसरो – खुसरो की पहेलियाँ एवं मुकरियाँ	15 तासिकाएँ
इकाई – II	पूर्वमध्यकालीन काव्य (कबीर/जायसी) कबीर – सं. हजारीप्रसाद द्विवेदी – पदसंख्या 171 से 180	15 तासिकाएँ

	कबीर की काव्यकला, भाषा, समन्वय, मानवता, लोकमंगल जायसी – पद्मावत नागमती वियोग खंड (आरंभ के 11 से 19) जायसी की काव्यकला, भाषा, समन्वय, विरह वर्णन, लोकतत्व	
इकाई – III	सूरदास – भ्रमरगीत सार – सं. रामचंद्र शुक्ल (पद 31 से 40) सूरदास की काव्यकला, भाषा, समन्वय, लोकमंगल, विरह वर्णन। तुलसीदास – रामचरितमानस – उत्तरकाण्ड (आरंभ के 26 से 50) तुलसीदास की काव्यकला, भाषा, लोकमंगल, समन्वय, भक्ति, आदर्श कल्पना।	15 तासिकाएँ
इकाई – IV	पूर्वमध्यकालीन काव्य (मीरा/भूषण) मीरा – सं. विश्वनाथ त्रिपाठी – (आरंभ के 11 से 20 पद) मीरा की काव्यकला, भाषा, प्रेमतत्व, प्रगतिशीलता, विरह वर्णन। भूषण : भूषण की काव्यकला, भाषा, नीतितत्व, समन्वय, राष्ट्रप्रेम (पद 1 से 25)	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. कबीर - हजारीप्रसाद द्विवेदी
2. जायसी ग्रंथावली - सं. रामचंद्र शुक्ल
3. संक्षिप्त सूरसारगर - सं. डॉ. प्रेमनारायण टंडन
4. मीराबाई की पदावली - सं. परशुराम चतुर्वेदी
5. महाकवि भूषण - सं. भगीरथ प्रसाद दीक्षित
6. काव्य की भूमिका - रामधारी सिंह दिनकर
7. घनानंद कवित्त – चंद्रशेखर मिश्र शास्त्री
8. साहित्य और मानवीय संवेदना - डॉ. सदानंद भोसले
9. जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन - प्रो. हरेंद्रप्रताप सिन्हा
10. महाकवि जायसी और उनका काव्य - डॉ. इकबाल अहमद
11. मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य - डॉ. शिवसहाय पाठक.
12. जायसी पद्मावत काव्य और दर्शन - डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
13. पद्मावत में काव्य, संस्कृति और दर्शन – डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
14. पद्मावत का काव्य सांदर्य - डॉ. चंद्रबली पाण्डेय
15. हिंदी के प्रतिनिधि कवि - डॉ. सुरेश अग्रवाल
16. प्राचीन कवि – विश्वंभर मान
17. कबीर साहित्य की परख – परशुराम चतुर्वेदी
18. जायसी – रामपूजन तिवारी

◈◈◈

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष/प्रथम अयन

अ. क्र.	**Major Mandatory**	क्रेडिट
HIN3.	हिंदी कहानी साहित्य	4

लक्ष्य (Aim) :

कहने और सुनने की आदमी की वृत्ति प्राचीन है। नये युग की कहानियों पर पश्चिम कहानियों का प्रभाव है और इन कहानियों का प्राचीन भारतीय कथा साहित्य से क्रमगत संबंध नहीं है। भारतेंदु युग से हिंदी कहानी का नया स्वरूप आरंभ होता है। जीवन मर्म या उद्देश ही कहानी का प्राण तत्व है। वर्तमान कहानी का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है । नीति व्यवहार, मनोविज्ञान, विचार, जीवन के प्रति नई सोच, व्यक्तिगत एवं सामाजिक कई क्षेत्रों को कहानी बयान कर रही है। स्वतंत्रता के बाद तो कहानी का विकास बहुत ही गति से हुआ। नई कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी, सक्रिय कहानी,आदि कहानी आंदोलनों ने कहानी को वर्तमान तक विकसित किया है। आज अध्ययन अध्यापन एवं शोध कार्य की दृष्टि से हिंदी कहानी साहित्य का क्षेत्र बृहत है। वैयक्तिक एवं सहजीवन की दृष्टि से हिंदी कहानी साहित्य महत्वपूर्ण है।

परिणाम (Outcomes) :

1. हिंदी कहानी साहित्येतिहास को समझेंगे।
2. प्रेमचंद की कहानी कला से अवगत होंगे।
3. राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह की कहानी कला को समझेंगे ।
4. फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी कला को समझेंगे।

5. सत्यवती मलिक, अज्ञेय, शेखर जोशी, ज्ञानरंजन की कहानी का आस्वादन व मूल्यांकन करेंगे।
6. कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा ,नासिरा शर्मा ,गीतांजली श्री की कहानी कला से अवगत होंगे।
7. मोहनदास नैमिशराय , जयप्रकाश कर्दम, जैनेंद्र, अरविंद मिश्र की कहानी कला सिखेंगे।
8. कहानी साहित्य की आलोचना करेंगे।
9. कहानी साहित्य द्वारा अभिव्यक्त जीवन मूल्य से अवगत होंगे और उनका प्रचार प्रसार करेंगे।
10. कहानी लेखन कला से अवगत होंगे ।

शिक्षाविधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, साक्षात्कार विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि ।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	हिंदी कहानी का उद्भव एवं विकास प्रेमचंद पूर्व कहानी, प्रेमचंद युगीन कहानी, प्रेमचंदोत्तर कहानी। 1. दूध का दाम – प्रेमचंद 2. दो फूल – सत्यवती मालिक 3. कानों में कंगना – राधिका रमण प्रसाद सिंह	15 तासिकाएँ
इकाई – II	1. तीसरी कसम – फणिश्वरनाथ रेणु 2. खितिन बाबू – अज्ञेय 3. कोसी का घटवार – शेखर जोशी 4. पिता – ज्ञानरंजन	15 तासिकाएँ
इकाई – III	1. दादी अम्मा – कृष्णा सोबती 2. चिह्नार – मैत्रेयी पुष्पा 3. पाँचवा बेटा – नासिरा शर्मा	15 तासिकाएँ

	4. वैराग्य – गीतांजली श्री	
इकाई – IV	1. हैरिटेज – मोहनदास नैमिशराय 2. नो बार – जयप्रकाश कर्दम 3. इनाम – जैनेंद्रकुमार 4. धर्मपुत्र – अरविंद मिश्र	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. नई कहानी के विविध प्रयोग –शिशिभूषण पाण्डेय शीतांषु
2. कालजयी साहित्य और हिंदी कहानी – डॉ. राजेंद्र खैरनार
3. समकालीन हिंदी कहानी – डॉ. पुष्पापाल सिंह

❖❖❖

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष/प्रथम अयन

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN4.	हिंदी व्यावहारिक व्याकरण	2

लक्ष्य (Aim) :

जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप और प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है उसे व्याकरण कहते हैं। व्याकरण के नियम बहुधा लिखी हुई भाषा के आधार पर निश्चित किए जाते हैं। उनमें शब्दों का प्रयोग बोली हुई भाषा की अपेक्षा अधिक सावधानी से किया जाता है। व्याकरण शब्द का अर्थ- 'भली-भांतिसमझना' है। व्याकरणमें वह नियम समझाए जाते हैं जो प्रबुद्धजनों के द्वारा स्वीकृत शब्दों के रूपों और प्रयोगों में दिखाई देते हैं। भाषा में यह भी देखा जाता है कि कई शब्द दूसरे शब्दों से बनते हैं और उनमें एक नया ही अर्थ पाया जाता है। वाक्यमें शब्दोंका उपयोग किसी विशेष क्रमसे होता है और उनमें रूप अथवा अर्थ के अनुसार परस्पर संबंध रहता है। इस अवस्था में आवश्यक है कि पूर्णता और स्पष्टतापूर्वक विचार प्रकट करने के लिए शब्दों के रूप में तथा प्रयोगों में स्थिरता और समानता हो। व्याकरण द्वारा इस समस्या का हल समय –समय पर खोजा जाता है। व्याकरण भाषा संबंधीशास्त्र है और भाषाका मुख्य अंग वाक्य है। वाक्य शब्दोंसे बनता है और शब्द मूलध्वनियोंसे लिखी हुई भाषा में एक मूल ध्वनि के लिए एक चिह्न रहता है जिसे वर्ण कहते हैं। वर्ण, शब्द और वाक्यके विचार से व्याकरण के मुख्य तीन विभाग होते हैं- वर्ण विचार, शब्द साधन, वाक्यविन्यास। समय-समय पर भाषा में परिवर्तन होता है। भाषा पहले और व्याकरण बाद में आता है। समय-समय पर भाषा में जो बदलाव हुए हैं उन बदलावों को भाषा के लिखितरूप में सुनिश्चित कराने हेतु व्याकरण के अध्ययन की आवश्यकता होती है।

एम.ए.स्तर पर हिंदी व्याकरण का अध्ययन, भाषा विश्लेषण एवं सृजनात्मकता के लिए आवश्यकहै।

परिणाम(Outcomes) :

1. छात्र भाषा का शुद्ध रूप समझेंगे।
2. हिंदी भाषा-व्याकरण की विधि का ज्ञान प्राप्त होगा।
3. लिखित भाषा में उनके भूलोंका कारण समझेंगे।
4. व्याकरण-अध्ययन से हिंदी भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा।
5. हिंदी भाषा सीखने में कठिनाइयां दूर होगी।
6. वर्ण विचार का ज्ञान प्राप्त होगा।
7. शब्द साधन का ज्ञान प्राप्त होगा।
8. वाक्यविन्यास का ज्ञान प्राप्त होगा।
9. भाषा शिक्षण संबंधी चारों कौशलोंका ज्ञान प्राप्त होगा।
10. तुलनात्मक व्याकरणके अध्ययन एवं विश्लेषण का कौशल प्राप्त होगा।

शिक्षाविधि (Pedagogy) :

व्याख्यानविधि, विश्लेषणविधि, तुलनात्मकविधि, प्रत्यक्षकार्यविधि।

इकाई	**पाठ्यविषय**	**तासिकाएँ**
इकाई – I	**शब्दसाधन:** **1. लिंग:** परिभाषा, लिंगकेभेद: पुलिंग, स्त्रीलिंग। लिंग-निर्णय: अर्थकेआधारपर, रूपकेआधारपर। लिंगपरिवर्तन: पुलिंगसेस्त्रीलिंग। वचन: परिभाषा।वचनकेभेद: एकवचन, बहुवचन। **2. वचनपरिवर्तन:** एकवचनसेबहुवचन 1. विभक्तिरहित 2. अपवाद। **3. कारक:** परिभाषा, कारककेभेद, विभक्तिचिह्न।	15 तासिकाएँ

	कारकभेद: कर्ताकारक, कर्मकारक, करणकारक, संप्रदान कारक, अपादानकारक, संबंधकारक, अधिकरणकारक, संबोधनकारक। 4. **सर्वनाम:** परिभाषा, सर्वनामकेभेद: पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचकप्रश्नवाचक, निजवाचक।	
इकाई-II	1. **विशेषण:** परिभाषा, विशेषणकेभेद: गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक। 2. **क्रिया:** परिभाषा,धातु: धातुकेभेद- प्रेरणार्थकधातु, नामधातु, संयुक्तधातु। क्रियाकेभेद: सकर्मकक्रिया, अकर्मकक्रिया, संयुक्तक्रिया। **3. संधि:** परिभाषा, संधिकेभेद: स्वरसंधि, व्यंजनसंधि,विसर्गसंधि। **4. समास:** परिभाषा, समासकेभेद:अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वंद्व, बहुव्रीहि।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन :50%

सत्रांत परीक्षा : 50%

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी व्याकरण- कामता प्रसाद गुरु, प्रकाशन संस्थान, नईदिल्ली 2020
2. विशुद्ध हिंदी भाषा- सदानंद भोसले, विकास प्रकाशन, कानपुर 2007
3 हिंदी भाषा शिक्षण- संपादक: सदानंद भोसले, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

◈◈◈

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष/प्रथम अयन

	Major Elective Mandatory (one)	**क्रेडिट**
HIN5.	हिंदी नाटक और रंगमंच	4

लक्ष्य (Aim) :

हिंदी नाटक लिखने की परंपरा आधुनिक युग में आरंभ हुई है। इससे पूर्व लिखे गए नाटकों में नाटक कला के तत्वों का अभाव दिखाई देता है। आधुनिक युग के पूर्व लिखे गए नाटक एक तो नाटकीय काव्य है या संस्कृत नाटकों के अनुवाद है। हिंदी में नाट्य लेखन की शुरुआत सही अर्थों में भारतेंदु युग से हुई है। नाटक साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन के साथ समाज तक कोई महत्वपूर्ण संदेश पहुंचाना रहा है। नाटककार नाटक के माध्यम से मानव जीवन की विविध परिस्थितियां अथवा विविध मानसिक अवस्थाओं का चित्रण करता है। इस कारण पाठक या दर्शक अपनी समकालीन समस्याओं से अवगत होता है। इससे स्पष्ट है कि नाटक जन जागरण का महत्वपूर्ण कार्य करता है।

नाटक मूलतः रंगमंचीय कला है। इसी कारण नाटक का केवल लिखित रूप तक सीमित रहना सफल नहीं कहा जा सकता। उसकी असली सफलता रंगमंच पर प्रस्तुत होने में है। रंगमंच लिखित नाटक को दृश्य रूप में आयाम देता है, वह शब्दों से भी कहीं अधिक जीवंत होता है। पाठक नाटक के लिखित रूप में से कई गुना अधिक उसके रंगमंचीय प्रदर्शन द्वारा प्रभावित होता है, लेकिन इससे नाटक के साहित्यिक स्वरूप की महत्ता जरा भी कम नहीं होती। स्पष्ट है नाटक केवल पठनीय साहित्य नहीं है बल्कि उससे रंगमंचीय प्रदर्शन की अपेक्षा होती है।

परिणाम(Outcomes) :

1. नाटक के स्वरूप एवं संरचना से अवगत होंगे।
2. भारतीय नाटक विकास क्रम को जानेंगे।
3. हिंदी नाटक और रंगमंच की विकास यात्रा का अध्ययन करेंगे।
4. रंगमंच की विभिन्न शैलियां जानेंगे।
5. नाट्याभिनय कौशल प्राप्त होगा।
6. मोहन राकेश के नाटक साहित्य से परिचित होंगे।

7. मोहन राकेश के नाटकों के द्वारा नाट्यास्वादन करेंगे।
8. मीरा कांत के नाटकों का अध्ययन करेंगे।
9. मीरा कांत के नाटकों द्वारा नाट्यास्वादन करेंगे।
10. मोहन राकेश और मीरा कांत की नाट्य भाषा तथा शैली से अवगत होंगे।
11. पाठ्यक्रम में निर्धारित नाटकों द्वारा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों को जानेंगे।
12. भारतीय नाटक साहित्य में मोहन राकेश तथा मीराकांत के योगदान को जानेंगे।

शिक्षा विधि (Pedagogy):

व्याख्यान पद्धति, अर्थ कथन विधि, प्रयोग विधि, कक्षाभिनय विधि, संवाद प्रस्तुति विधि, अध्ययनयात्रा पद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	नाटक और रंगमंच, स्वरूप एवं संरचना हिंदी रंगमंच का विकासक्रम रंगमंच की विभिन्न शैलियाँ नाटकी की भारतीय परंपरा पारसी थिएटर, मराठी नाट्य परंपरा।	15 तासिकाएँ
इकाई – II	नाटक की पाश्चात्य परंपरा नाट्य शिल्प के विविध आयाम अभिनय, रंगसंकेत, रंगभाषा ध्वनि योजना, प्रकाश योजना, संगीत योजना, नाट्य निर्देशन।	15 तासिकाएँ
इकाई – III	निर्धारित नाटक आषाढ का एक दिन – मोहन राकेश कथ्यगत अध्ययन, रंगमंचीय अध्ययन, तात्विक मूल्यांकन।	15 तासिकाएँ

इकाई – IV	निर्धारित नाटक काली बर्फ – मीराकांत रंगमंचीय अध्ययन तात्विक मूल्यांकन।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. आषाढ का एक दिन – मोहन राकेश
2. काली बर्फ – मीराकांत
3. नाटक और रंगमंच – संपा. गिरिश रस्तोगी
4. रंग दर्शन – नेमिचंद्र जैन
5. हिंदी नाटक : उद्भव और विकास – दशरथ ओझा
6. हिंदी नाट्य विमर्श – संपा. सदानंद भोसले
7. रंगभाषा – नेमिचंद्र जैन
8. पारसी थियेटर उद्भव और विकास – सोमनाथ गुप्त
9. नाट्यलोचन – डॉ. माधव सोनटक्के
10. रंगमंच - बलवंत गार्गी
11. मोहन राकेश : रंग-शिल्प और प्रदर्शन – जयदेव तनेजा
12. रंगमंच का सौंदर्य शास्त्र – देवेन्द्रराज अंकुर
13. रंग दर्शन – नेमिचंद्र जैन

14 संस्कृत और हिंदी नाटक रचना एवं रंगकर्म – जयकुमार जलज

◈◈◈

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष/प्रथम अयन

	Major Elective Mandatory (one)	**क्रेडिट**
HIN6.	राजभाषा हिंदी : संवैधानिक स्थिति	4

लक्ष्य (Aim) :

भाषा राष्ट्रीय अस्मिता की वाहिका होती है। इसलिए राष्ट्र की स्वतंत्रता का स्वप्न भी भाषा की मुक्ति से जुड़ा होता है। अंग्रेजों की उपनिवेशवादी गुलामी से मुक्त होने के बाद देश जब आज़ाद हुआ तब संविधान निर्माताओं ने देश की आवश्यकता को समझते हुए भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया। चूँकि हिंदी केवल अपनी सरसता, मधुरता, ओजस्विता एवं प्रयोजनमूलकता से भारत को एकसूत्र में ही नहीं पिरोती बल्कि हमारी संस्कृतिक जड़ों को भी मजबूत बनाती है।

'राजभाषा' राजकाज की भाषा होती है। इसका अनुप्रयोग बोलचाल की भाषा से भिन्न होता है। सरकारी और अर्द्ध सरकारी कार्यालयों में कामकाज की भाषा के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है। जिस तरह हिंदी साहित्य का अध्ययन जरूरी है। उसी तरह राजभाषा हिंदी का अध्ययन भी रोजगार के अनेक अवसर प्रदान करता है। अतः कार्यालयीन हिंदी के विविध रूप तथा प्रशासकीय हिंदी की विविध प्रयुक्तियाँ समझना आवश्यक है। क्योंकि इस अध्ययन का संभाव्य प्रतिफल राजभाषा अधिकारी है। इतना ही नहीं सरकारी, अर्द्ध सरकारी कार्यालयों में जो हिंदी प्रयुक्त होती है, उससे भी हर सरकारी कर्मचारी को रू-ब-रू होना जरूरी है।

परिणाम(Outcomes) :

1. राजभाषा की अवधारणा से परिचित होंगे।
2. भाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, मानक भाषा और राजभाषा के अंतर को समझेंगे।
3. राजभाषा हिंदी के स्वरूप एवं विकास की प्रक्रिया समझेंगे।
4. संविधान में राजभाषा संबंधी प्रावधानों की व्याख्या कर सकेंगे।
5. राजभाषा हिंदी की संवैधानिक सीमाओं को जान सकेंगे।
6. राजभाषा अधिनियमों का आकलन कर आपसी अंतर समझेंगे।

7. हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यरत संस्थाओं का योगदान समझकर प्रत्यक्ष भेंट हेतु प्रेरित होंगे।
8. भारत देश की बहुभाषिकता एवं बहुसांस्कृतिकता को समझेंगे और राष्ट्रीय एकता बनाने के लिए प्रयास करेंगे।
9. द्विभाषी नीति और त्रिभाषा सूत्र की अवधारणा एवं महत्व समझेंगे।
10. राजभाषा हिंदी की समस्याओं एवं चुनौतियों को समझेंगे।

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, अध्ययन यात्रा पद्धति, प्रत्यक्ष कार्य पद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	राजभाषा हिंदी : संकल्पना, परिभाषा और स्वरूप। राजभाषा, सह राजभाषा, द्वितीय राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्कभाषा। राजभाषा का अभिलक्षणिक स्तर पर अंतर।	15 तासिकाएँ
इकाई – II	राष्ट्र-विकास में हिंदी भाषा की भूमिका। भारत की बहुभाषिकता और एक संपर्क भाषा की आवश्यकता। राजभाषा के रूप में हिंदी की स्वीकृति संबंधी मतभेदों का स्वरूप। भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी का विकास।	15 तासिकाएँ
इकाई – III	राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति : संविधान का भाग – 17 अनुच्छेद 120 से 210 और अनुच्छेद 343 से 351 राष्ट्रपति का आदेश – 1952, 1955, 1960, 1963 राष्ट्रभाषा अधिनियम - 1976	15 तासिकाएँ
इकाई – IV	राजभाषा एकक और प्रबंधन। वार्षिक कार्यक्रम और उसका कार्यान्वयन। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की समस्याएँ और बाधक तत्व।	15 तासिकाएँ

	द्विभाषा नीति और त्रिभाषा सूत्र। हिंदी के प्रचार-प्रसार में सरकारी और स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं की भूमिका।	

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. राजभाषा हिंदी – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
2. राजभाषा हिंदी – डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. प्रयोजनमूलक हिंदी – रवींद्रनाथ तिवारी
4. राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएँ और समाधान – डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा
5. राजभाषा हिंदी : विवेचन और प्रयुक्ति – डॉ. किशोर वासवानी
6. राजभाषा हिंदी – सेठ गोविंददास
7. राजभाषा प्रबंधन – डॉ. गोवर्धन ठाकुर
8. भारतीय राष्ट्रभाषा : सीमाएँ तथा समास्याएँ – डॉ. सत्यव्रत
9. भारत का संविधान प्राधिकृत संस्करण 2005

◈◈◈

एम. ए. साहित्य प्रथम वर्ष / प्रथम अयन

	Major Elective Mandatory (one)	क्रेडिट
HIN7.	हिंदी भाषा शिक्षण	4

लक्ष्य (Aim) :

भाषा मानव मस्तिष्क की उपज है। भाषा मानव जीवन का प्रमुख प्रवाह है- निरंतर गतिशील, अनुपम और चमत्कारी भाषा मानव को अन्य जीव धारियों से अलग करती है। मानव सभ्यता और संस्कृति का अविरल विकास भाषा के बिना संभव न हुआ होता। भाषा की सहायता से चिंतन मनन होता है। कल्पना की ऊंची उड़ान भाषा के पंखों से ही संभव है। भाषा के द्वारा ही विचार, विनिमय, तर्क-वितर्क और हास-परिहास होता है।भाषा ही मनुष्य को वास्तविक अर्थों में सामाजिक प्राणी बनाती है। भाषा संभाषण के लिए प्रयुक्त होती है।

भाषा की संप्रेषणात्मक शक्ति ही भाषा को अपरिमित शक्ति संपन्न बनाती है।मानव भाषा का मूल आधार संप्रेषण है। भाषा शिक्षण आधुनिक युग में मानव के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। अनेक अध्यापक भाषा शिक्षण के अनवरत अनुष्ठान में लगे हैं। सरकार, प्रकाशक, लेखक, विद्वान और अन्य अनेक सहायक भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत हैं। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भाषा शिक्षण के क्षेत्र में अभूतपूर्व हलचल हुई है ।भाषा अर्जन और भाषा अधिगम के विषय में विस्तार से चर्चा की गई। भाषा चिंतन की नवीन दिशा में अनेक विधियों को प्रस्तुत किया गया जिनका प्रयोग आज अध्ययन और अनुसंधान से आगे जाकर भाषा शिक्षण के लिए हो रहा है। भाषा अर्जन और भाषा अधिगम के मूलभूत अंतर को भाषा शिक्षण के संदर्भ में देखने से यह ज्ञात होता है कि भाषा अर्जन बालक समाज में करता है।वह अपनी भाषा, मातृभाषा या प्रथम भाषा को ग्रहण करता है।इसे भाषा वैज्ञानिक भाषा का अर्जन करना मानते हैं। मातृभाषा सीखने के पश्चात बालक जब किसी दूसरी भाषा को सीखता है तब उसे भाषा अधिगम का नाम दिया जाता है। मातृभाषा का प्रथम भाषा के संबंध में अर्जन और अन्य भाषा के संदर्भ में अधिगम शब्द का प्रयोग होता है। भारत बहुभाषिक देश है और तमाम भारतीय भाषाओं के बीच हिंदी सांस्कृतिक आदान-प्रदान का काम करती है। इसलिए हिंदी भाषा शिक्षण एम.ए.के स्तर पर पढ़ाया जाना चाहिए।

परिणाम (Outcomes) :

1. छात्र भाषा शिक्षण-स्वरूप समझेंगे।
2. मातृभाषा शिक्षण को समझेंगे।
3. द्वितीय भाषा शिक्षण की प्रक्रिया, विदेशी भाषा शिक्षण की प्रक्रिया से अवगत होंगे।
4. भाषा कौशल का विकास होगा।
5. श्रवण, भाषण, वाचन तथा लेखन कौशल से अवगत होंगे।
6. भाषा शिक्षण प्रणालियों का ज्ञान प्राप्त होगा।
7. भाषा शिक्षण में उपयोगी साधन सामग्री द्वारा भाषा शिक्षण प्रक्रिया को समझेंगे।
8. कंप्यूटर और भाषा शिक्षण विधि को समझेंगे।
9. पाठ नियोजन सिद्धांत और प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
10. भाषा शिक्षण संबंधी शोध करेंगे।

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान पद्धति, विश्लेषण विधि, प्रत्यक्ष कार्यपद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	भाषा शिक्षण : स्वरूप और उद्देश्य। भाषा शिक्षण संदर्भ में भाषा प्रकार : मातृभाषा। द्वितीय भाषा : भाषा शिक्षण की प्रक्रिया। विदेशी भाषा : भाषा शिक्षण की प्रक्रिया। माध्यम के रूप में भाषा।	15 तासिकाएँ
इकाई – II	भाषा कौशल और विकास : श्रवण, भाषण, वाचन तथा लेखन। कौशलों का स्वरूप और योग्यता प्राप्ति के विविध सोपान।	15 तासिकाएँ
इकाई – III	भाषा शिक्षण की प्रणालियाँ : व्याकरण अनुवाद प्रणाली, प्रत्यक्ष प्रणाली, संप्रेषणपरक प्रणाली, संरचनात्मक प्रणाली। भाषा परीक्षण एवं मूल्यांकन : स्वरूप उद्देश्य और विधियाँ।	15 तासिकाएँ
इकाई – IV	भाषा शिक्षण में उपयोगी साधन सामग्री। कक्षा में प्राप्त सामग्री : नक्शे, चार्ट, मॉडल, चित्र आदि।	15 तासिकाएँ

	वाचन सामग्री : पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, कोश आदि। अनौपचारिक साधन : आकाशवाणी , चलचित्र, दूरदर्शन आदि। मल्टीमिडिया सामग्री। कंप्यूटर और भाषा शिक्षण। पाठ नियोजन : सिद्धांत और प्रक्रिया। पाठ नियोजन की आवश्यकता, पाठ नियोजन की तकनीक, दैनिक पाठ योजना।	

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान : सिद्धांत और प्रयोग – रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
2. हिंदी भाषा : स्वरूपऔर विकास – कैलाशचंद्र भाटिया
3. हिंदी शिक्षण – मनोरमा शर्मा
4. हिंदी भाषा शिक्षण – भोलानाथ तिवारी, कैलाश भाटिया
5. हिंदी शिक्षण – उषा सिंहल
6. हिंद शिक्षण – केशव प्रसाद
7. हिंद शिक्षण – डॉ. जयनारायण कौशिक
8. हिंदी शिक्षण : अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य – सं. सतीशकुमार रोहरा
9. भाषा शास्त्र के सूत्रधार – सं. नगेंद्र, रवींद्र श्रीवास्तव

◈◈◈

एम. ए. साहित्य प्रथम वर्ष / प्रथम अयन

	Internship	क्रेडिट
HIN8.	शोध प्रविधि (Research Methodolgy)	4

लक्ष्य (Aim) :

आवश्यकता अविष्कार की जननी है। समाज के प्रत्येक क्षेत्र की आवश्यकता शोध द्वारा पूर्ण की जाती है। मानव समाज के विकास एवं समस्या निवारण के लिए तथा सुंदर जीवन के लिए शोध की आवश्यकता होती है। मानव मस्तिष्क में स्वभावतः नई-नई जिज्ञासा का निर्माण होता रहता है। मानव तर्कशील और प्रज्ञावान प्राणी होने के कारण वह अपने जिज्ञासा से संबंधित क्षेत्र में नये प्रयोग द्वारा शोध में प्रवृत्त रहता है। शोध के पीछे मनुष्य का प्रमुख उद्देश जीवन को अधिक सुखमय, सुंदर, उदात्त, विराट और सांस्कृतिक बनाना होता है। मनुष्य द्वारा किए जाने वाले शोध को मोटे तौर पर दो प्रकार में विभाजित किया जाता है- भौतिक और दार्शनिक (भौतिकेतर ,सांस्कृतिक) संस्कृति के समग्र विकास हेतु ज्ञानविज्ञान, दर्शन और साहित्य के क्षेत्र में शोध की मूलभूत अनिवार्यता है। संस्कृति और ज्ञान की शाश्वत प्रतिमान की पुष्टि और नवीन व्याख्या नवीन मूल्य और तथ्यों की खोज, विवादास्पद क्षेत्रों एवं विकल्पों के समाधान हेतु शोध की आवश्यकता है । किसी भी भाषा और साहित्य का शोध उस भाषा एवं साहित्य की जन संस्कृति की पौराणिकता, इतिहास, सम सामायिकता तथा भावी संभावनाओं के महत्व का अधिक दर्शन करता है।

परिणाम (Outcomes) :

1. छात्र शोध प्रविधि को समझेंगे।
2. शोध की विविध प्रक्रियाओं की जानकारी प्राप्त होगी ।
3. शोध के नये संदर्भ प्राप्त होंगे।
4. छात्र प्रत्यक्ष शोध कार्य के साथ जुडेंगे ।
5. शोध पयोरिजनाओं के अंतर्गत शोध कार्य करेंगे ।
6. पुस्तक आलोचना का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
7. शोधालेख लेखन व मूल्यांकन का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

8. लघुशोध परियोजना एवं शोध परियोजना के अंतर्गत शोध कार्य में शोध सहाय्यक के रूप में भूमिका अदा करेंगे।
9. ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, तुलनात्मक, प्रायोगिक, सर्वेक्षणात्मक शोध को समझेंगे।
10. शोध निष्कर्ष संबंधी तर्क पद्धतियों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
11. शोध विषय ,शोध समस्या, शोध रूपरेखा, शोध प्रबंध लेखन आदि का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करेंगे।

शिक्षाविधि (Pedagogy) :

व्याख्यानविधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि ।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	**शोध का स्वरूप :** शोध के लिए प्रयुक्त विभिन्न शब्द एवं उनका औचित्य। शोध की विभिन्न परिभाषाएँ और उनका विश्लेषण। शोध के उद्देश्य, शोध की विवेचन पद्धति। वस्तुनिष्ठ, तर्कसंगति , प्रमाणबद्धता।	15 तासिकाएँ
इकाई – II	**शोध के मूलतत्व :** शोध और आलोचना। शोध के भेद : साहित्यिक, साहित्येतर। साहित्यिक शोध के भेद : वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, अंतर्विद्याशाखीय, सर्वेक्षण शोध पद्धति।	15 तासिकाएँ
इकाई – III	**शोध प्रक्रिया :** विषय चयन, सामग्री संकलन के स्रोत: मूल, सहायक, हस्तलेख संकलन एवं उपयोगिता। तर्क पद्धति : निगमनात्मक पद्धति (Deductive Method)और आगमनात्मक पद्धति (Inductive Method)। विवेचन, निष्कर्ष, स्थापना।	15 तासिकाएँ

इकाई – IV	**शोध प्रबंध लेखन प्रणाली :** शोध प्रबंध, शीर्षक निर्धारण, रूपरेखा, भूमिका लेखन, अध्याय विभाजन, उद्धरण, संदर्भ सूची, MLA पद्धति (Modern Language Association), सहायक ग्रंथ सूची, परिशिष्ट, वर्तनीसुधार, टंकण, यूनिकोड परिचय, पुस्तक समीक्षालेखन, शोधालेख लेखन, साहित्यिक चोरी(Plagiarism)।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. शोध तंत्र और सिद्धांत – शैलकुमारी
2. शोध प्रविधि – डॉ. विनयमोहन शर्मा
3. अनुसंधान की प्रक्रिया – सुरेशचंद्र निर्मल
4. अनुसंधान के तत्व – विश्वनाथप्रसाद मिश्र
5. शोध प्रविधि – डॉ. विनयमोहन शर्मा

◈◈◈

एम. ए. हिंदीप्रथम वर्ष / द्वितीय अयन

अ. क्र.	**Major Mandatory**	क्रेडिट
HIN9.	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	4
HIN10.	भारतीय लोक साहित्य	4
HIN11.	हिंदी उपन्यास साहित्य	4
HIN12.	हिंदी आलोचना	2
	Major Elective Mandatory (one)	
HIN13.	हिंदी पत्रकारिता	4
HIN14.	आधुनिक हिंदी कविता	4
HIN15.	हिंदी कथेतर गद्य साहित्य	4
	Internship	
HIN16.	On Job Training [OJT/ FP]	4

◈◈◈

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष /द्वितीयअयन

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN9.	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	4

लक्ष्य (Aim) :

भारतीय काव्यशास्त्र शब्द और उसकी अवधारणा का विकास, संस्कृत साहित्य की सुधीर्ग चिंतन परंपरा सेजुड़ा हुआ है।जिस ज्ञान को प्राप्त कर कवि सुंदर कविता कर सकता है और काव्य का पूरा आनंद प्राप्त करता है वह ज्ञान है काव्यशास्त्र। काव्य के स्वरूप को समझना और उसके तत्वों का विश्लेषण करना इसी का
कार्य है। सच है कवि काव्य की संवेदना से युक्त होते हैं और भावक काव्यशास्त्र के ज्ञान से कभी साधारणजन की अपेक्षा भाव की अधिक आकांक्षा करता है। काव्य शास्त्रीय विचार परंपरा सिद्धांतों में विभक्त कीजाती है। रस सिद्धांत, अलंकार सिद्धांत, रीति सिद्धांत, ध्वनि सिद्धांत, औचित्य सिद्धांत और वक्रोक्तिसिद्धांत।इस प्रकार लगभग दो हजार वर्षों की यह परंपरा रही है।पाश्चात्य काव्यशास्त्र की भी एक सुदीर्घ परंपरा रही है। पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति, साहित्य,दर्शन,कला, विज्ञान आदि के मूल स्रोत का संधान करने वाले को अनिवार्यता मिस्र या यूनान को जानना होता है।पाश्चात्य काव्यशास्त्र ने विश्व काव्य मीमांसा के लिए बहुत कुछ दिया है।यह परंपरा प्लेट,अरस्तु, विलियमवर्ड्सवर्थ, कॉलरीज,मैथ्यू अर्नाल्ड आदि के होते हुए वर्तमान समय तक विद्यमान रही है।काव्य मीमांसा, काव्यलेखन, काव्य आस्वादन आदि को लेकर इसने साहित्य जगत को ज्ञान से आलोकित किया है। एम. ए. स्तरपर पढ़ने वाले विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के ज्ञान से अभिभूत करने केलिए इस पाठ्यक्रम की आवश्यकता है।

परिणाम(Outcomes):

1. भारतीय काव्यशास्त्र का विकासक्रम समझेंगे।
2. रस सिद्धांत का स्वरूप समझेंगे।
3. रस निष्पत्ति के सिद्धांतों को समझेंगे।
4. रस के अंग तथा साधारणीकरण की प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
5. अलंकार सिद्धांत का स्वरूप समझेंगे।

6. काव्य में अलंकारों के महत्व का ज्ञान प्राप्त होगा।
7. ध्वनि सिद्धांत का महत्व समझेंगे।
8. ध्वनि काव्य के प्रमुख भेदों का ज्ञान प्राप्त होगा।
9. प्रोक्ति विज्ञान का कार्य एवं स्वरूप समझेंगे।
10. प्रोक्तिका कौशल हासिल करेंगे।
11. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांतों का काव्य मूल्यांकन में एवं शोध कार्य में व्यवहार्य प्रयोग सीखेंगे।
12. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का विकास क्रम समझेंगे। प्लेटो तथा अरस्तु के अनुकरणसिद्धांत का ज्ञान प्राप्तकरेंगे।
13. टी. एस. इलियट के काव्य से संबंधित सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
14. आई. ए.रिचार्डस के काव्य शास्त्रीय सिद्धांतों का स्वरूप समझेंगे।
15. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का काव्य आलोचना में एवं अनुसंधान में व्यावहारिक प्रयोग करना सीखेंगे।

शिक्षा विधि (Pedagogy):

व्याख्यान पद्धति, विश्लेषण पद्धति, प्रत्यक्षकार्य पद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई –I	भारतीय काव्यशास्त्र का विकासक्रम। रस सिद्धांत : रस का स्वरूप, रस के अंग, रस निष्पति के सिद्धांत (भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक, अभिनव गुप्त) साधारणीकरण की आवधारणा। सहृदय की अवधारणा।	15 तासिकाएँ
इकाई –II	अलंकार सिद्धांत : परिभाषा, स्वरूप, अलंकार के भेद। काव्य में अलंकार का महत्व। वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद।	15 तासिकाएँ

	ध्वनि सिद्धांत : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धांत के प्रमुख भेद,ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद।	
इकाई –III	टी. एस. इलियट : निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, वस्तुनिष्ठ समीकरण।	15 तासिकाएँ
इकाई –IV	आई. ए. रिचडर्स : मूल्य सिद्धांत। संप्रेषण सिद्धांत। काव्य भाषा सिद्धांत। व्यावहारिक आलोचना।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. भारतीय साहित्यशास्त्र – आ. बलदेव उपाध्याय।
2. काव्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. नगेंद्र ।
3. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र।
4. साहित्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांत – डॉ. राममूर्ती त्रिपाठी।
5. पाश्चात्य साहित्य चिंतन – निर्मला जैन, कुसुम बांठिया।
6. संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र – गोपीचंद नारंग।
7. आस्तित्ववाद और मानववाद – ज्यां पॉल सार्त्र।
8. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. बच्चन सिंह।
9. विश्व साहित्य – सं. डॉ. नगेंद्र।
10. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेंद्रनाथ शर्मा।

11 भारतीय काव्याशास्त्र की रूपरेखा – योगेंद्र प्रताप सिंह

12 पाश्चात्य काव्याशास्त्र के सिद्धांत – शांतीस्वरूप गुप्त

◈◈◈

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष /द्वितीयअयन

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN10.	भारतीय लोक साहित्य	4

लक्ष्य (Aim) :

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को समझने के लिए लोकसाहित्य का अध्ययन-अनुशीलन की आवश्यकता है। लोकसाहित्य के अध्ययन से भारत के विभिन्न प्रदेशों के लोक जीवन तथा लोकादर्शों का परिचय सबको एक-दूसरे के निकट लाएगा। भारत में प्रत्येक स्थान की अपनी भाषा व संस्कृति है। इस कारण उसमें मान्यताएं, अंधविश्वास, लोकरूढियां, लोक-कथाएं, लोकसंगीत व लोकनाट्य की अलग-अलग शैलियां दिखाई देती हैं। लोकसाहित्य लोक जीवन की अभिव्यक्ति, उसकी आशाओं तथा आकांक्षाओं का प्रेरक और संरक्षक है। जनसाधारण के मनोभावों एवं विचारों को समझने के लिए लोकसाहित्य को अपनाना तथा उसका अध्ययन नितांत आवश्यक है।

परिणाम (Outcomes) :

1. लौकिक साहित्य की आधार भूमि समझेंगे।
2. विभिन्न प्रदेशों की भाषा, संस्कृति का अध्ययन करेंगे।
3. विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं, जातियों एवं जनजातियों का अध्ययन करेंगे।
4. लोककथा व लोकभाषा का अध्ययन करेंगे।
5. लौकिक साहित्य और लिखित साहित्य के अंत:संबंध का अध्ययन करेंगे।
6. समाज की मान्यताएं, अंधविश्वास, त्यौहार, रीति-रिवाज, गीत, कथा-कहानियां, लोकोक्तियां, कहावतें आदि का अध्ययन करेंगे।
7. विभिन्न प्रदेशों व भाषा के लोकसाहित्य में निहित जीवनमूल्यों से परिचित होंगे और उसका प्रचार-प्रसार करेंगे।
8. लोकसाहित्य विषय को लेकर शोधकार्य करेंगे।

शिक्षाविधि (Pedagogy):

व्याख्यानपद्धति, विश्लेषणपद्धति, प्रत्यक्षकार्यपद्धति, अध्ययनयात्रापद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई –I	लोकसाहित्य की परिभाषा, स्वरूप एवं विशेषताएँ, लोक संस्कृति और साहित्य, भारत में लोकसाहित्य के अध्ययन का इतिहास।	15 तासिकाएँ
इकाई –II	लोक-साहित्य संकलन : उद्देश्य, संकलन की पद्धतियाँ, संकलन कर्ता की समस्याएँ तथा समाधान।	15 तासिकाएँ
इकाई –III	लोक-गीत : संस्कार, व्रत, श्रम, ऋतु, जाति। लोकनाट्य : रामलीला, रासलीला, कीर्तनिया, स्वांग, यक्षगान, भवाई, जात्रा। महाराष्ट्र का लोकनाट्य : तमाशा, गोंधळ, लावणी, पोतराज, सुंबरन, वासुदेव, भारुड, लळित, दशावतार, पोवाडा, किर्तन।	15 तासिकाएँ
इकाई –IV	लोक-कथा : व्रत कथा, परी कथा, नाग कथा, बोध कथा, कथानक रूढियाँ। लोक संगीत : लोकवाद्य तथा विशिष्ट लोक धुनें। लोकभाषा : लोक सुभाषित, मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. भारतीय लोकसाहित्य – डॉ. श्याम परमार
2. लोकसाहित्य की भूमिका – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
3. लोकसाहित्य की भूमिका – पं. रामनरेश त्रिपाठी
4. महाराष्ट्र की हिंदी लोककला – कृ. ग. दिवाकर
5. लोकसाहित्य और लोकसंस्कृति – दिनेश्वर प्रसाद
6. पारंपरिक भारतीय रंगमंच –कपिला वात्स्यायन, अनु. बरीउज्जया
7. लोकसाहित्य विज्ञान – डॉ. सत्येंद्र
8. लोकसाहित्य एवं लोक संस्कृति : परंपरा की प्रासंगिकता एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य – सं. वीरेंद्रसिंह यादव

◈◈◈

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष /द्वितीयअयन

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN11.	हिंदी उपन्यास साहित्य	4

लक्ष्य (Aim) :

हिंदी उपन्यास साहित्यहिंदी उपन्यास साहित्य ने विश्व साहित्य को प्रभावित किया है। उपन्यास विधा साहित्य की वर्तमान सबसेचर्चित विधा है। समग्र हिंदी उपन्यास साहित्य की उपलब्धियों एवं सीमाओं पर एक साथ विचार करना कठिनकार्य है क्योंकि हिंदी उपन्यास लेखन की अनेक मंजिलें पाकर विस्तार पा चुका है किंतु वह वैविध्यपूर्ण भी हो चुका है। इसीलिए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि उसके विकास की प्रमुख अवस्था को भिन्न-भिन्न कर विचार किया जाए। हिंदी उपन्यास में प्रेमचंद को एक सशक्त धुरी माना जा सकता है। वह ऐसीकेंद्रीय स्थिति में प्रतिष्ठित हैं कि उनके पूर्ववर्ती और परवर्ती उपन्यासों पर अलग से विचार किया जा सकताहै।इस दृष्टि से समग्र हिंदी उपन्यास साहित्य को तीन युग में बांटना उचित प्रतीत होता है-1. प्रेमचंद पूर्व युग, 2.प्रेमचंद युग और 3. प्रेमचंदोत्तर युग।

उपन्यास साहित्य में तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों का प्रभाव अनिवार्यतारहा है। उपन्यास साहित्य ने भारतीय समाज की समस्याएं और वैश्विक समाज के बारे में चिंता प्रकट की है।जीवन के नए-नए विचार प्रवाह को उपन्यासों ने शब्द बद्ध किया है। वर्तमान हिंदी उपन्यास घटनाओं कीदृष्टि से स्थूल से सूक्ष्म की ओर अग्रसर हो रहा है।अब कहानी कहना ही लेखक का उद्देश्य नहीं रहा है।उपन्यासकार की गहराइयों में होने वाली क्रियाओं,प्रतिक्रियाओं को अंकित करने का प्रयास करना है। अतःमनोवैज्ञानिक अधिक गहराई है। आज कथा के साथ अनुभूति तथा ज्ञान का गहरा संबंध परिलक्षित होता है।लेखक अपने परिवेश विशेष रूप से सामाजिक परिवेश के प्रति बहुत अधिक सचेत है। लेखक कीऐतिहासिक पकड़ बहुत सूक्ष्म हो गई है और उसमें सांस्कृतिक पक्ष को अधिक प्रश्रय देने लगे हैं। इसलिएभारतीय सभ्यता,संस्कृति और जीवन मूल्यों को उपन्यास साहित्य के माध्यम से समझने की दृष्टि से एम.ए. केस्तर पर प्रस्तुत पाठ्यचर्या आवश्यक है।

परिणाम(Outcomes):

1. छात्र को उपन्यास की विकास यात्रा का ज्ञान प्राप्त होगा।
2. उपन्यास के भिन्न-भिन्न भेदों का ज्ञान प्राप्त होगा।
3. पठित उपन्यासों की युग चेतना का ज्ञान प्राप्त होगा।
4. उपन्यासों में प्रस्तुत सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त होगा।
5. उपन्यासों मेंअभिव्यक्त चरित्रों का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन करेंगे।
6. उपन्यासों में अभिव्यक्त जीवन मूल्यों से अभिभूत होंगे।
7. उपन्यासों में अभिव्यक्त सहजीवन मूल्यों का प्रचार-प्रसार करेंगे।
8. उपन्यास लेखन कला का ज्ञान अर्जित होगा।
9. उपन्यासों का शोध अध्ययन की दृष्टि से ज्ञान अर्जित करेंगे।
10. उपन्यास के तत्व में जो परिवर्तन हुआ है उसका ज्ञान अर्जित करेंगे।

शिक्षाविधि (Pedagogy):

व्याख्यानपद्धति, विश्लेषणपद्धति, प्रत्यक्षकार्यपद्धति, अध्ययनयात्रापद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई –I	हिंदी उपन्यास साहित्य का विकासक्रम प्रेमचंद पूर्व युग, प्रेमचंदयुग, प्रेमचंदोत्तर युग।	15 तासिकाएँ
इकाई –II	स्वर्णमृग – गिरीराज किशोर संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	15 तासिकाएँ
इकाई –III	भटको नहीं धनंजय – पद्मा सचदेव संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	15 तासिकाएँ
इकाई –IV	धरती धन न अपना – जगदीश चंद्र संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. भटको नहीं धनंजय – पद्मा सचदेव
2. धरती धन न अपना – जगदीश चंद्र
3. स्वर्णमृग – गिरीराज किशोर
4. आधुनिक हिंदी उपन्यास – नामवर सिंह।
5. आज का हिंदी उपन्यास – डॉ. इंद्रनाथ चौधरी।

◈◈◈

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष /द्वितीयअयन

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN12.	हिंदी आलोचना	2

लक्ष्य (Aim) :

किसी वस्तु या कृति की चमक,व्याख्या अथवा उसका मूल्यांकन आदि करना आलोचना है।व्यवहारिकजीवन में किसी न किसी व्यक्ति वस्तु अथवा कार्यकलाप की आलोचना में हमारी सहज प्रवृत्ति होती है किंतुसंस्कारों,चिंतन क्षमता एवं सामाजिक अवधारणा आदि अन्य व्यक्तिगत विशेषताओं के परिणाम स्वरूपहमारी प्रतिक्रियाओं में अंतर रहता है।इसी प्रकार साहित्य की आलोचना प्रतिक्रियाओं की देन होती है किंतुयह प्रतिक्रियाएं वैज्ञानिक संयम से अनुशासित रहती हैं। आलोचना के लिए समीक्षा शब्द भी प्रयुक्त होतारहा है। समीक्षा का उत्पत्ति परक अर्थ है- चमक,निरीक्षण। आलोचना मानव की सहज प्रवृत्ति है। यही कारणहै कि उसका अस्तित्व अन्य माननीय प्रवृत्तियों अथवा संवेदनाओं की भांति चिरकाल से ही स्वीकार किया जाता है।

आलोचना को साहित्य के संदर्भ में देखने पर साहित्य रचना के बाद उसका निर्माण सिद्ध हो जाताहै।पहले रचनात्मक साहित्य प्रकाश में आता है और उसकी आलोचना की आवश्यकता बाद में अनुभव कीजाती है।हिंदी आलोचना के आरंभिक युग में सामान्यतः यह धारणा प्रचलित थी कि आलोचना का अर्थ कृतिविशेष का गुण-दोष विवेचन मात्र है। उत्पत्ति पर अर्थ लेने पर भी तात्पर्य में कोई बाधा नहीं पड़ती। इसलिएप्राचीन काल से ही आलोचक कृति विशेष का गुण दोष निर्णय मात्र अपना धर्म समझते रहे हैं किंतु वर्तमानहिंदी आलोचना का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। परिणाम स्वरूप समीक्षा, आलोचना, समालोचना आदि शब्दों काअर्थ विस्तार हो गया है। वर्तमान आलोचना के अंतर्गत किसी कृति की विशेषताओं पर विचार करना,उसकीउपलब्धियों एवं अभावों का मूल्यांकन करना, रिश्ता एवं अभावों के विषयों में निर्णय देना, उसे श्रेणी बद्ध करना आदि अनेक अर्थ आते हैं। रचना को समझने में पाठक की मदद करना भी आलोचक का दायित्व है। साहित्य आलोचना की दृष्टि एवं

अनुसंधानात्मक दृष्टि विकास के लिए एम.ए.के पाठ्यक्रम में हिंदी आलोचना अध्ययन, अध्यापन की आवश्यकता है।

परिणाम(Outcomes) :

1. छात्र हिंदी आलोचना से अवगत होंगे।
2. छात्र आलोचना के सामाजिक सरोकार से अवगत होंगे।
3. छात्रों को आलोचना साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन का ज्ञान प्राप्त होगा।
4. छात्र मनोवैज्ञानिक आलोचना कौशल आर्जित करेंगे।
5. छात्रों कोशैलीवैज्ञानिक आलोचना और सौंदर्य शास्त्रीय आलोचना ज्ञान प्राप्त होगा।
6. छात्रों कोस्वच्छंदतावादी आलोचना, पारिस्थितिकी आलोचना आदि आलोचना ज्ञान प्राप्त होगा।
7. छात्रों को हिंदी के प्रमुख आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य नंददुलारे वाजपेई के आलोचना का ज्ञान प्राप्त होगा।
8. छात्रों को हिंदी के आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य नामवरसिंह, आचार्य रमेश कुंतल मेघ आदि की आलोचना से ज्ञान अर्जित करेंगे।
9. आलोचना का प्रत्यक्ष ज्ञान एवं शोध में आलोचना का महत्व आदि ज्ञान प्राप्त होगा।

शिक्षाविधि (Pedagogy):

व्याख्यानपद्धति, विश्लेषणपद्धति, प्रत्यक्षकार्यपद्धति, अध्ययनयात्रापद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई –I	आलोचना: स्वरूप एवं उद्देश्य। हिंदी आलोचना का संक्षिप्त इतिहास। आलोचना के सामाजिक सरोकार। आलोचना सार्थक और निरर्थक। कलावाद का खंडन और लोकमंगल की स्थापना। साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन की आवश्यकता।	15 तासिकाएँ
इकाई –II	आलोचना दृष्टि एवं पद्धतियां।	15 तासिकाएँ

	मनोवैज्ञानिक आलोचना, शैलीवैज्ञानिक आलोचना, सौंदर्य शास्त्रीय आलोचना, स्वच्छंदतावादी आलोचना, पारिस्थितिकी आलोचना। हिंदी के प्रमुख आलोचक: आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य नंददुलारे वाजपेई, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य नामवरसिंह, आचार्य रमेश कुंतल मेघ।	

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50%

सत्रांत परीक्षा : 50%

संदर्भ ग्रंथ :

1. आलोचना की सामाजिकता-मैनेजर पांडेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,द्वितीय संस्करण 2008।
2. साहित्य सिद्धांत – डॉ. राम अवध द्विवेदी

◈◈◈

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष /द्वितीयअयन

	Major Elective Mandatory (one)	**क्रेडिट**
HIN13.	हिंदी पत्रकारिता	4

लक्ष्य (Aim) :

जनतंत्र में पत्रकारिता का विशेष महत्व है।जनतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में पत्रकारिता का महत्व स्वीकारा गयाहै। आज पत्रकारिता जनसेवा का सशक्त माध्यम है।वर्तमान वैज्ञानिक युग में पत्रकारिता का महत्व दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है।जीवन की विविधताओं, नित्य घटित घटनाओं आदि को शीघ्र अति शीघ्रता के साथदुनिया के हर कोने में पहुंचाने का कार्य पत्रकारिता द्वारा संभव हुआ है। पत्रकारिता का स्वरूप एक महत्वपूर्ण

पक्ष है। हिंदी पत्रकारिता में विशेष रूप से प्रिंट मीडिया का समावेश किया जाता है ।प्रिंट मीडिया का शताब्दीसे सूचना के क्षेत्र में वर्चस्व रहा है।वर्तमान भारत में भारतीय भाषाओं में सबसे अधिक हिंदी में पत्र-पत्रिकाएंप्रकाशित होती हैं। वर्तमान वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में समाचारों के संकलन,लेखन,संपादन में पहले कीअपेक्षा सहेजता आई है।कम समय में अखबार का प्रकाशन संभव हो गया है।मुद्रण एवं संपादन कला में भीसुंदरता आई है। वर्तमान प्रिंट मीडिया, भाषा एवं साहित्य पढ़ने वाले विद्यार्थियों की दृष्टि से रोजगार का एक महत्वपूर्ण क्षेत्रबन गया है। एम.ए. में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को हिंदी पत्रकारिता का विशेष ज्ञान एवं रोजगार के अवसरों कोध्यान में रखते हुए यह पाठ्यक्रम गठित किया है।

परिणाम(Outcomes) :

1. छात्र हिंदी पत्रकारिता का विकास समझेंगे।
2. प्रेस कानून एवं आचार संहिता का ज्ञान प्राप्त होगा।
3. समाचार संकलन कार्य सीखेंगे।
4. समाचार के स्रोत, समाचार समितियों की भूमिका आदि का ज्ञान प्राप्त होगा।
5. संवादाता और जनसंपर्क हेतु पत्रकारिता की कला सीखेंगे।
6. पत्रकारिता लेखन का ज्ञान प्राप्त होगा।
7. समाचार पत्रों के लिए फीचर लिखेंगे।

8. संपादकीय,अग्रलेख कास्वरूप, ग्रंथ ज्ञान प्राप्त होगा।
9. रिपोर्टिंग, साक्षात्कार,समीक्षालेखन का ज्ञान प्राप्त होगा।
10. मुद्रण एवं संपादन कला अवगत करेंगे।
11. मुद्रण में कंप्यूटर का प्रयोग सीखेंगे।
12. संपादन कला मेंशीर्षक, लेआउट, भाषा आदि का ज्ञान अर्जित करेंगे।
13. हिंदी पत्रकारिता क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

शिक्षाविधि (Pedagogy):

व्याख्यानपद्धति, विश्लेषणपद्धति, प्रत्यक्षकार्यपद्धति, अध्ययनयात्रापद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई –I	हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास। नवजागरणयुगीन हिंदी पत्रकारिता। स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता। प्रेस कानून एवं आचार संहिता।	15 तासिकाएँ
इकाई –II	समाचार संकलन, समाचार के स्रोत, समाचार की उपयुक्ता, समाचार स्रोत संस्थाएँ (PTI, ANI) संवाददाता और जनसंपर्क।	15 तासिकाएँ
इकाई –III	पत्रकारिता लेखन, समाचार, संपादकीय, अग्रलेख, रिपोर्टिंग, साक्षात्कार,	15 तासिकाएँ

	समीक्षा।	
इकाई –IV	मुद्रण एवं संपादनक कला। मुद्रण में कंप्यूटर का प्रयोग। समाचारेतर सामग्री का संपादन। शीर्षक, प्रूफ रीडिंग, ले आउट एव साज-सज्जा, भाषा। किसी एक विषय का (कृषि , विज्ञान, फिल्म, क्रीडा पत्रकारिता) भाषागत अध्ययन विश्लेषण।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास – कृष्ण बिहारी मिश्र
2. समकालीन पत्रकारिता : मूल्यांकन और मुद्दे – राजकिशोर
3. आज की हिंदी पत्रकारिता – सुरेश निर्मल
4. पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा – अलोक मेहता
5. संपादन पृष्ठ और मुद्रण – प्रो. रमेश जैन
6. पत्रकारिता के सिद्धांत –डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी
7. समाचार संपादन – सं. रामशरण त्रिपाठी
8. हिंदी पत्रकारिता : स्वरूप और संरचना – चंद्रदेव यादव
9. समाचार, फीचर लेखन एवं संपादन कला – हरिमोहन
10. पत्रकारिता और संपादलन कला – प्रेमनाथ राय
11 हिंदी पत्रकारिता का बाजार भाव – जवाहरलाल कौल

◈◈◈

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष /द्वितीयअयन

	Major Elective Mandatory (one)	**क्रेडिट**
HIN14.	आधुनिक हिंदी कविता	4

लक्ष्य (Aim) :

मानव सभ्यता के सर्वांगीण विकास में साहित्य का अतुलनीय योगदान रहा है। आधुनिक काल के हिंदी कवियों ने इस दृष्टि से कविता साहित्य में कई प्रयोग किए हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल हिंदी भाषा और साहित्य के विकास की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय काल है। आधुनिक काल में खड़ी बोली के माध्यम से गद्य और पद्य दोनों का समान विकास हुआ है। आधुनिक काल का कविता साहित्य नवीनता का भाग बनकर जनसाधारण में नवोन्मेष भरता दिखाई देता है। इस काल का साहित्य सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों में जन आकांक्षाओं के अनुरूप जन आंदोलन को प्रेरित करता है, अतः इसे पुनर्जागरण काल के रूप में भी जाना जाता है। आधुनिक काल का कविता साहित्य बदलते हुए परिवेश में विभिन्न परिस्थितियों पर प्रकाश डालता है। इस दृष्टि से आधुनिक काल में हिंदी कविता का जो उन्नत स्वरूप दिखाई देता है वह विशिष्ट एवं उल्लेखनीय है।

आधुनिक हिंदी काव्य का आरंभ 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। यह वह समय था जब हम अंग्रेजी सत्ता के गुलाम थे। अंग्रेजों के शासनकाल में बंगाल, महाराष्ट्र और पंजाब में सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार आन्दोलन की गूंज चारों दिशाओं में फैल रही थी। उस समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसे सक्रिय साहित्यकारों ने सामाजिक जन जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तत्कालीन धर्म-समाज सुधारक आन्दोलन की गतिविधियों से हिंदी साहित्य काफ़ी हद तक प्रभावित हुआ है। परिणाम स्वरूप आधुनिक हिंदी कविताओं में राष्ट्रीयता, समाज सुधार, देशप्रेम, जनजागरण, विदेशी शक्तियों के प्रति तीव्र आक्रोश, शोषण तथा अत्याचार के विरुद्ध जन आंदोलन आदि भावों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता साहित्य में मानव जीवन का अधिकाधिक यथार्थ और सूक्ष्म अंकन हुआ है। जिससे समाज मन में आम आदमी के प्रति काफी हद तक सहानुभूति निर्माण होने में सहायता हुई

है। आधुनिक कविता साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ हरिवंशराय बच्चन, केदारनाथ सिंह, कैलास वाजपेयी, शैल चतुर्वेदी, ज्ञानेंद्रपती, निर्मला पुतुल, वंदना टेटे आदि कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनका कविता साहित्य समाज को नई दृष्टि प्रदान करता है।

परिणाम (Outcomes) :

1. कविता के स्वरूप एवं संरचना से अवगत होंगे।
2. आधुनिक हिंदी कविता के विकास क्रम को जानेंगे।
3. आधुनिक हिंदी कविता की संवेदना से परिचित होंगे।
4. कविता की विभिन्न शिल्प पक्ष को जानेंगे।
5. काव्य सर्जन कौशल को प्राप्त करेंगे।
6. आधुनिक काल की विभिन्न परिस्थितियों से परिचित होंगे।
7. हरिवंशराय बच्चन, केदारनाथ सिंह, कैलास वाजपेयी आदि की कविताओं का रसास्वादन करेंगे।
8. शैल चतुर्वेदी, निर्मला पुतुल, वंदना टेटे आदि की कविताओं का अध्ययन करेंगे।
9. आधुनिक काल के कवियों की काव्य भाषा से अवगत होंगे।
10. हिंदी साहित्य एवं समाज सुधार कार्य में आधुनिक हिंदी कवियों के योगदान को जानेंगे।

शिक्षाविधि (Pedagogy):

व्याख्यानपद्धति, विश्लेषणपद्धति, प्रत्यक्षकार्यपद्धति, अध्ययनयात्रापद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई –I	आधुनिक हिंदी कविता का विकासक्रम समकालीन कविता, नयी कविता, अकविता, जनवादी कविता। **हरिवंशराय बच्चन :**	15 तासिकाएँ

	1. जो बीत गई 2. पुकार लो उक्त रचनाओं का संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	
इकाई –II	**केदारनाथ सिंह :** 1. नदियाँ 2. माँ, सुई और तागे के बीच में **कैलास वाजपेयी :** 1. गैया 2. कूड़ा उक्त रचनाओं का संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	15 तासिकाएँ
इकाई –III	**ज्ञानेंद्रपति :** 1. टेडी बीयर में बचे हुए भालू 2. धूएँ के पेड़ की तरह उगी है चिमनियाँ **शैल चतुर्वेदी :** 1. लेन-देन 2. गज़ल उक्त रचनाओं का संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	15 तासिकाएँ
इकाई –IV	**निर्मल पुतुल :** 1. आओ मिलकर बचाएँ 2. अपने घर की तलाश में **वंदना टेटे :** 1. हमारे बच्चे नहीं जानते तोतो-रे नोनो –रे 2. पलाश नहीं है जंगल। उक्त रचनाओं का संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी कविता अभी बिल्कुल अभी – नंदकिशोर नवल ।
2. हिंदी कविता आधुनिक आयाम – डॉ. रामदरश मिश्र।
3. अकविता और कला संदर्भ – डॉ. श्याम परमार।
4. हिंदी साहित्य का इतिहास – रामचंद्र शुक्ल।
5. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र।
6. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त

◈◈◈

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष /द्वितीयअयन

	Major Elective Mandatory (one)	**क्रेडिट**
HIN15.	हिंदी कथेतर गद्य साहित्य	4

लक्ष्य (Aim) :

हिंदी साहित्य में गद्य साहित्य के अंतर्गत आत्मकथा, निबंध, संस्मरण और रेखाचित्र आदि विधाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। किंतु इन नई विधाओं की ओर पाठकों, चिंतकों अधिक ध्यान नहीं दिया। 20 वीं सदी में यह विधाएँ स्थापित होकर 21 वीं शती में विकसित हुई हैं। वर्तमान भारतीय साहित्य में आत्मकथा साहित्य ने प्रभाव जमाया है। हिंदी साहित्य की यह एक चर्चित एवं लोकप्रिय विधा बन गयी है। निबंध साहित्य ने भी ललित साहित्य एवं वैचारिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रभाव जमाया है। संस्मरण साहित्य में कतिपय रचनाकारों ने पारिस्थितिकी, सांस्कृतिक, राजनीतिक विषयों में पहल की है। रेखाचित्र साहित्य में भी आम आदमी से लेकर विशेष प्रतिभाओं पर प्रभाव जमाया है। आज हिंदी साहित्य जगत में कथेतर उक्त विधाओं में सर्जन एवं शोध की अत्यंत आवश्यकता है।

परिणाम: (Outcomes)

1. छात्र कथेतर गद्य साहित्य से अवगत होंगे।
2. छात्र को आत्मकथा विधा से अवगत होंगे।
3. छात्र निबंध विधा से अवगत होंगे।
4. छात्र संस्मरण विधा से अवगत होंगे।
5. छात्र रेखाचित्र विधा से अवगत होंगे।
6. छात्रों में आत्मकथा, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र आदि साहित्य की आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होगी।
7. छात्रों में आत्मकथा, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र साहित्य लेखन की प्रतिभा का विकास होगी।
8. कथेतर उक्त विधाओं से लेखक द्वारा प्रस्तुत वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन, सहजीवन मूल्यों का संवर्धन एवं प्रचार प्रसार होगा।

9. छात्रों में साहित्यिक मूल्य संवर्धन वृत्ति का निर्माण होगा।

शिक्षाविधि (Pedagogy):

व्याख्यानपद्धति, विश्लेषणपद्धति, प्रत्यक्षकार्यपद्धति, अध्ययनयात्रापद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई –I	**आत्मकथा साहित्य का विकासक्रम** मुर्दहिया – तुलसीराम संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	15 तासिकाएँ
इकाई –II	**निबंध साहित्य का विकासक्रम** 1. रामचंद्र शुक्ला – करुणा 2. विद्यानिवास मिश्र – मेरे राम का मुकुट भीग रहा है। 3. हरिशंकर परसाई – निंदा रस 4. नामवर सिंह – कबीर का सच उक्त रचनाओं का संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	15 तासिकाएँ
इकाई –III	**संस्मरण साहित्य का विकासक्रम** 1. महादेवी वर्मा – स्मरण प्रेमंचद 2. रामवृक्ष बेनीपुरी – बाढ़ का बेटा 3. अज्ञेय – वसंत का अग्रदूत 4. विष्णु प्रभाकर – शमशू मिस्त्री उक्त रचनाओं का संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	15 तासिकाएँ
इकाई –IV	**रेखाचित्र साहित्य का विकासक्रम** 1. शरद जोशी – अफ़सर 2. अज्ञेय – खितीन बाबू 3. भीमसेन त्यागी – एक और चक्रव्यूह 4. जगदीश माथुर – अमृत के स्रोत उक्त रचनाओं का संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50 %

सत्रांत परीक्षा : 50 %

संदर्भ ग्रंथ :

1. माटी की मूरतें – रामवृक्ष बेनीपुरी
2. मुर्दहिया – तुलसीराम
3. चिंतामणि भाग 1 एवं 2 - आ. रामचंद्र शुक्ल
4. आतित के चलचित्र – महादेवी वर्मा

◈◈◈

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष /द्वितीयअयन

	Internship	क्रेडिट
1.	On Job Training [OJT / FP]	4

अंक : 100

◈◈◈